उपसंहार

अनुवाद आज अपने सैद्धांतिक संदर्भ में बहु आयामी और प्रयोजन में बहुमुखी हो गया है, किंतु अनुवाद की सार्थकता और व्यावहारिकता में जो संवर्धन हुआ, उसी अनुपात में उसके सिद्धांतों पर गहराई से चिंतन नहीं हुआ। अनुवाद तो सादृश्यधर्मी सर्जनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें भाषा मात्र एक साधन या उपकरण के समान इस्तेमाल होती हैं।

'हू रोट मॉय डेस्टिनी' के लेखक पी.आर.सुभाषचंद्रन जी ने इस जीवनी को अंग्रेजी में लिखा है। उसका हिंदी अनुवाद प्रोफेसर.टी.वी.कट्टीमनी जी ने 'किसने मेरा भाग्य लिखा' नाम से किया है। इस जीवनी में महराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहे चुके श्री सुशीलकुमार शिंदे जी जी के जीवन यात्रा के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की गई है। जो एक ढोर जाति के गरीब लड़के से है और किस प्रकार अपने परिश्रम और मेहनत से एक राजनेता के रूप में समाज के सामने आए हैं। शिंदे जी एक ऐसे व्यक्ति है जिनमें कई गुण और विशेषताएँ भरी हुई हैं। एक संपूर्ण व्यक्तित्व जिसने अपने आपको विपरीत परिस्थितियों का सामना करके संवारा हो। पारंपरिक चर्मकार परिवार में जन्मा एक दलित बालक जिसने पुलिस अफसर बनकर कुछ समय तक क्षत्रिय की भूमिका निभाई, जिसने वैश्य की भूमिका वकील बनकर निभाई। अपनी प्रतिभा और परिश्रम से जिसने वह स्थान प्राप्त किया जो आमतौर पर ब्राह्मण वर्ण से जुड़ा समझा जाता है। ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े हुए एक व्यक्ति के ये बहुरंग रूप हैं।

इस प्रस्तुत लघु शोध विषय 'किसने मेरा भाग्य लिखा' का अनुवादपरक विश्लेषण में हिंदी कृति जिसका अनुवाद प्रोफेसर.टी.वी.कट्टीमनी जी ने किया है उसके और अंग्रेजी कृति 'हु रोट मॉय डेस्टिनी' के बीच अनुवाद के स्तर से तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण करने का अथक प्रयास किया गया है।

पहले अध्याय में साहित्यिक अनुवाद का स्वरूप और उसके क्षेत्र के बारे में बताया गया है। इसके बाद साहित्यिक विधाओं और जीवनी जो साहित्यिक विधा का ही एक अंश हैं उसका संक्षिप्त रूप से परिचय दिया गया है और साहित्य में जीवनी का क्या स्थान है वो भी उसमें दर्शाया गया है। इसके बाद क्योंकि यह विषय ही अनुवादपरक विश्लेषण से संबंधित है उसके अंतर्गत अंग्रजी से हिंदी अनुवाद करते समय उत्पन्न होने वाली समस्याओं के बारे में बताया गया है।

दुसरे अध्याय में जीवनी के तत्व के आधार पर 'किसने मेरा भाग्य लिखा' जीवनी की विस्तार से व्याख्या की गई है। इसमें जीवनी के मुख्य पांच तत्वों को विस्तार से समझाया गया और इस जीवनी में उन तत्वों का विश्लेषण किस प्रकार किया गया है उसके बारे में विस्तारपूर्वक ढंग से बताया गया है। इस अध्याय में जीवनी के जो पांच तत्व है- घटना, चरित्र-चित्रण, देशकाल, उद्देश्य और शैली के बारे में किसने मेरा भाग्य लिखा जीवनी से तुलना करके यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि जिस प्रकार जीवनी के तत्व हैं उसी तत्वों का प्रयोग कर इस जीवनी की भी रचना की गई है, इसके लिए जीवनी से कुछ उदाहरण भी इस अध्याय में दिए गए हैं।

तीसरे अध्याय में जो इस लघु-शोध प्रबंध का मुख्य अध्याय है, इसमें अनुदित पाठ का विभिन्न स्तरों में अनुवादपरक विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत विभिन्न स्तर दर्शायें गए है जैसे- पाठ सरंचना के स्तर पर लेखक की अपेक्षा अनुवादक ने किस प्रकार पाठ की संरचना की है। दूसरा स्तर हैं- सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर। इसमें यह बताया गया है कि इस जीवनी में जो सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष हैं उनको अनुवादक ने किस प्रकार से पाठकों के सामने लाया है। इस अध्याय में जीवनी के मूल कृति अंग्रेजी के कुछ सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों के उदारणों को लेकर उनका अनुवाद जो हिंदी के अनुदित कृति में हैं उसको लेकर उन दोनों का विश्लेषण किया गया है। तीसरा स्तर हैं- राजनीति, क्योंकि यह जीवनी एक ऐसे व्यक्ति पर लिखी गई जो कांग्रेस के नेता और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहे चुकें हैं जिनका नाम है श्री सुशीलकुमार शिंदे। इसलिए इस जीवनी में राजनीति के विविध पक्ष दिए गए हैं। अनुदित कृति और मूल कृति की तुलना करके उसका विश्लेषण किया गया है। चौथा स्तर भाषा शैली का स्तर है। यह अनुवाद के नज़रिए से एक मुख्य बिंदु है , इसे दो बिन्दुओं के आधार पर वर्गीकृति किया गया है- शब्द के स्तर पर और मुहावरों और लोकोक्तियों के स्तर पर। इसमें मूल और अनुदित कृति दोनों में से कुछ उदारणों की सहायता से शब्द के और मुहावरों के स्तर पर अलग –अलग वर्गीकृति करके उसका विश्लेषण किया गया हैं। इस अध्याय में एक तालिका प्रस्तुत की गई है, जिसमें अंग्रेजी, हिंदी शब्द जो जीवनी में प्रयोग किये गए हैं उनके कोशगत अर्थ के साथ प्रस्तुत है।

इस प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध के विषय'किसने मेरा भाग्य लिखा का अनुवादपरक विश्लेषण' में निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है की मूल कृत 'हू रोट मॉय डेस्टिनी' के लेखक पी.आर.सुभाषचंद्रन जी ने इस जीवनी को सरल अंग्रेजी में लिखा है जो असानी से सबके समझ में आ सके, परंतु कहीं – कहीं ऐसे शब्दों, वाक्यों और मुहावरों-लिकोक्तियों का वर्णन किया है जिनको अनुवाद करते समय या तो उसका भावानुवाद करना पढ़ रहा है या

शब्दानुवाद। इस जीवनी के अनुवाद प्रोफेसरफ़ेसर टी.वी.कट्टीमनी जी ने किया जो हिंदी के प्रोफेसर भी हैं। उन्होंने इसका अनुवाद 'किसने मेरा भाग्य लिखा' नाम से किया। इसमें इन्होनें पाठ का सफल अनुवाद किया है। अनुवाद को रोचक बनाने के लिए उन्होंने इसमें मुहावरों और उद्धरणों का काफ़ी प्रयोग किया है जो मूल कृति में देखने को नहीं मिला।